स्मार्ट गोलियां और जीवन का अर्थ

ऐसा कहते हैं कि बढ़िया कॉफी पीकर आप कई श्रमसाध्य काम ज़्यादा जोश से करने लगते हैं। ऐसा लगता है कि काफी पीने से शरीर में दो रसायनों -एड्रीनेलीन और डोपामीन - का स्तर बढ़ता है और इसी का असर होता है कि आप किसी निरर्थक व उबाऊ काम को दुगने उत्साह से करने को प्रेरित होते हैं।

डेनमार्क के आर्हुस विश्वविद्यालय के टोर्बेन केर्सगार्ड ने अपने ताज़ा शोध पत्र में इसी सवाल को उन दवाइयों के संदर्भ में उठाया है जिनके बारे में मान्यता है कि वे आपकी संज्ञान क्षमता को बढ़ा देती हैं और आपके प्रदर्शन में सुधार करती हैं। एडेराल और मोडाफिनिल जैसी ये दवाइयां बच्चों में एकाग्रता के अभाव और अति सक्रियता तथा अनिद्रा जैसी गड़बड़ियों के लिए दी जाती हैं। मगर इनका उपयोग सामान्य लोग भी यह मानकर करते हैं कि इनके सेवन से उनकी संज्ञान क्षमता, याद रखने की क्षमता, एकाग्रता की क्षमता वगैरह बढ़ेंगे। यह बात इन दवाइयों के लेबल पर नहीं लिखी होती मगर इनका उपयोग ऐसे परिणामों के लिए किया जाता है। केर्सगार्ड यही समझना चाहते थे कि आखिर ये 'स्मार्ट' दवाइयां करती क्या हैं।

वैसे तो अभी तक जितने अध्ययन हुए हैं उनमें इन दवाइयों के संज्ञान क्षमता पर असर के प्रमाण संदिग्ध ही हैं। मगर केर्सगार्ड को चिंता इस बात की है कि यदि कोई दवाई आपको वैसे निरर्थक लगने वाले काम में रुचि लेने को प्रेरित करती है, तो यह एक समस्या है जिस पर विचार करने की ज़रूरत है। उन्होंने पाया कि इन दो दवाइयों पर किए गए अध्ययनों में यह बात सामने आई है कि इनके सेवन के बाद व्यक्ति को किसी उबाऊ काम में मन लगाने में मदद मिलती है। अर्थात यदि व्यक्ति यह दवा न ले तो वास्तव में जान पाएगा कि उसे किसी काम में रुचि नहीं है और यह जानने के बाद वह शायद किसी अन्य विकल्प का चुनाव करने को प्रेरित होगा।

मगर कुछ लोगों का कहना है कि शायद इन दवाइयों का यह उपयोग ठीक ही है। जब आपके सामने रोज़ी-रोटी कमाने के विकल्प सीमित हों, तो बेहतर यही होगा कि आप किसी प्रकार से अरुचिकर विकल्प पर काम करते रहें क्योंकि अन्यथा (अन्य विकल्पों के अभाव में) आपका जीना मुश्किल हो जाएगा।

केर्सगार्ड का मत है कि यदि समस्या विकल्पों के अभाव की है तो इसका समाधान दवाइयों में नहीं बल्कि सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक व्यवस्था में है और व्यक्ति को इस बात को दबाने की बजाय खुलकर इसका सामना करने का मौका मिलना चाहिए। अन्यथा विकल्पों के अभाव की स्थिति में इन दवाइयों का उपयोग एक राजनैतिक हथियार की तरह हो सकता है जिसकी मदद से आप लोगों को वही काम बड़ी रुचि से करने को तैयार कर सकते हैं जिसे वे नहीं करना चाहते। ***(स्रोत फीचर्स)***